(2) Dr. Sangita Aher (Hindi

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor In Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Index

Sr.	Article Title	Author	Page No.
	Hindi		
1	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रो.शंभुनाथ तिवारी का काव्य	प्राचार्य डॉ.रजनी शिखरे, संतोष नागरे	1
2	भूमंडलीकरण : साहित्य और समाज	डॉ. आर. गोपालकृष्णन	5
3	बस्तियों से बाहर (कविता संग्रह) में चित्रित दलित चेतना	इबरार खान	9
4	गज़ल साहित्य में वैश्विक समस्या - दहशतवाद की अभिव्यक्ति	प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	12
5	वैश्वीकरण के दौर में प्रभा खेतान के उपन्यासों की नारी चेतना	प्रा. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात	15
6	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में नक्सलबाडी कविता"	डॉ.आबासाहेब राठोड	17
7	समकालीन हिंदी कविता : बाजार से बाजारवाद तक	डॉ. के.बी. गंगणे	20
8	भूम्भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास साहित्य : डॉ. काशीनाथ सिंह रचित उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' के विशेष संदर्भ में	डॉ० विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य	22
9	जनसंचार माध्यम और भाषा स्वरुप डॉ.नवनाथ गाडेकर	डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	25
10	साहित्य और समाज बाजारवाद के चक्र में पिसता आदिवासी	डॉ.राजश्री भामरे	27
11★	वैश्वीकरण में नारी के प्रश्न	प्रा. डॉ.आहेर एस.ई.	29
12	वैश्विकरण : विभ्रम और यथार्थ	डॉ. बी. आर. नळे	31
13	हिंदी कविता में बाजारवाद	डॉ. मनोहर जमधाडे	35
14	वैश्वीकरण : साहित्य और समाज (कविता के संदर्भ में)	प्रा. पाटोळे अनिता किसन	37
15	जागतिकीकरण के दौर में हिंदी उपन्यासों में महानगरीय अवबोध	डॉ.काकडे परमेश्वर जिजाराव	40

ISSN : 2319 – 8648 CURRENT GLOBAL REVIEWER Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue 1 , Vol 1 , 10th Feb. 2018

वैश्वीकरण में नारी के प्रश्न

प्रा. डॉ.आहेर एस.ई.
सहयोगी प्रा.- हिंदी विभाग, महिला महाविदयालय, गेवराई, जि.बीड

----------(11)----------

प्रस्तावना

वैश्वीकरण, बाजारवाद उदारीकरण से पूरा विश्व प्रभावित है। अतीत से लेकर वर्तमान और वर्तमान से लेकर भविष्य के प्रति मनुष्य जागृत ही नहीं हुआ है बल्कि नित नयी खोज में लगा हुआ है। ज्ञान और विकास के दरवाजे खुले हैं, परन्तु समस्याएँ खत्म नहीं हुई है। वैश्वीकरण के युग में शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, व्यापार आदि सबकी दिशाएँ बदलने लगी है। नयी सामग्री और नयी अवधारणाओं की दृष्टी से मनुष्य जागरुक बनने लगा है। समकालीन समस्याओं के साथ भविष्य में आनेवाली समस्याओं से जूझने की कोशीश में मनुष्य लगा हुआ है। नारी सशक्तीकरण के परिप्रेक्ष्य में नारी का विकास महत्वपूर्ण विषय बन चुका है अतएवं उसके विकास की धारणा भी बलवती बन चुकी है।

वैश्वीकरण के दौर में विकास के दरवाजे खुले हैं परन्तु समस्याएँ खत्म नहीं हुई है। इसी परिप्रेक्ष्य में नारी प्रश्न एवं समस्याएँ भी बढ़ गई है। नारी-विमर्श को एवं प्रश्नों को सरकारी योजनाएँ कानून एवं साहित्य के माध्यम से समय-समय पर उजागर किया जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण है इसी लिए वैश्वीकरण का प्रतिनिधित्व भी साहित्य के माध्यम से होता है। नई सदी की चुनौतियाँ साहित्य में स्वीकार की गई है और समस्याओं का हल ढूँढने की कोशिश भी की गई है।"अपनी हर लड़ाई मैंने लिखकर जीती। मेरे कागज मोर्चा होते और सैनिक बनें ..." मेहरुन्निसा परवेज के ये शब्द उस स्त्री के संघर्ष का प्रतिबिंब है जो उसे प्रतिक्षण करना पड़ा।"[1]

वैश्वीकरण में नारी के प्रश्न एवं समस्याओं पर हल ढूँढा गया परन्तु फिर भी समस्याएँ खत्म नहीं हुई है। आज नारी का स्वरुप बदलता हुआ दिखाई देता है परन्तु वह उतना ही चुनौतिपुर्ण है। आज की नारी कई तरह की चुनौतियों का सामना करती हुई विश्व के प्रायः प्रत्येक समाज में एक मजबूत स्तम्भ बनकर उभरी है। प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता को सक्षमता से साबित कर रही है। "कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि आज हमारे समाज की नारी घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर अपनी स्वतंत्र्य सत्ता और इयत्ता की उद्घोषणा करती हुई पुरुष वर्चस्व को तोड़कर एकल, सामूहिक, पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायीक, राजकीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर विभिन्न निर्णयों को लेने में सक्षम है तथा आत्मविश्वास से भरी अपनी नयी पहचान स्थापित कर रही है।"[2] वैश्विक स्तर पर नारी की स्थिती में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। आज स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग ही नहीं हुई है बल्कि सामाजिक व्यवस्था के विरोध में अनेक गम्भीर चुनौतियों का सामना करती हुई अग्रसर हो रही है। स्त्री केवल अर्थिक रुप से ही आत्मनिर्भर नहीं हो रही है बल्कि जीवन के अहम निर्णयों पर अंमल करने की क्षमता प्राप्त कर चुकी है। नारी विकासोन्मुख हो रही है फिर भी सर्वोत्तम साबित होने के पुख्ता प्रमाण उसे देना पड़ता है। उसे उसके विविध रुपों को निभाते हुए एक अच्छी बहु, सास, पत्नी, एवं बेटी के रुप में अच्छा साबित करते हुए ऊँचे ओहदे तक पहुँचना पड़ता है। सदियों से समर्पण भाव को निभानेवाली नारी को आज भी समर्पित होना पडता है। "भूमंडलीकरण से नारी को जो कुछ मिला, उससे वह आगे बढ़ी। शिक्षा, समजागरुकता ने उसे एक नई वैचारिक शक्ति प्रदान की और वह 'पावर मेनजमेंट वुमेन' की छवी को नारी-मुक्ति मान बैठी। किंतु पारिवारिक संस्था को बचाए रखने का दायित्व भी महिला के कंधों पर था। इसलिए कुछ नारियों ने पावर वुमेन' की छवी को तिलांजलि दे परिवार के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया।"[3]

वैश्वीकरण के युग में यह बात सराहनीय है कि नारी की सोच में परिवर्तन हो रहा है। विवाह, घर-परिवार आदि के आदर्श रुप को ढोते हुए अनेक यातनाओं और पीडाओं को सहना ही नियती है इसे लांघकर वह स्वतंत्र्य इकाई का निर्माण कर रही है। अपने विचारों को उसने स्वतंत्र उड़ान दे दी है। विश्व के हर कोने में नारी विमर्श की चर्चा हो रही है। इतना ही नहीं पुरुषों के क्षेत्र में भी महिलाओं की मौजुदगी उल्लेखनीय है। आज की नारी अपने अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति सजग हुई है। " आज की नारी ने कला, साहित्य, शिक्षा, खेलकुद प्रतियोगिता धार्मिक क्षेत्र सेवाभाव सभी को अपनाया है।[4] आज नारी अपनी सक्षमता का परिचय दुनिया को करा रही है। उसकी इस काबिलियत को कभी सराहा जाता है तो कभी दबाया जाता है। बावजूद इसके राख से पुनर्निर्माण का बल उसने अपने पंखो में भर दिया है। पुरानी मान्यताओ को ठुकराकर अपने जीवन को नया आयाम देकर वह खुदको स्थापित कर रही है। इसका दुसरा पहलू यह भी है कि नारी स्वतंत्र्य तो हो गई परन्तु दूसरी ओर स्वच्छन्दता की प्रवृत्ती ने उसे एकाकी भी बना दिया है। घर एवं व्यवसाय तथा नौकरी के

दो पाटों के बीच में आज भी वह पीस रही है। घर और नौकरी की आपधापी में अपने आपको खो रही है। "वैश्वीकरण में खुले बाजार की व्यवस्था ने निजीकरण उदारिकरण को बढ़ावा दिया। निजीकरण, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में शोषण की शिकार नारियाँ ही है।"[३] वैश्वीकरण के युग में स्त्री को अपनी भाषा और अभिव्यक्ती की भरसक पहचान हो गई है। लेकिन इसके पहले उसने बहुत कुछ सहा और झेला है। आज भी उसे सहना ही नियती है के तहत घुट-घुट जीना पड़ता है। स्त्री सशक्तीकरण के दौर में आगे भी बढ़ रही है, लेकिन परिवार को बचाने का जिम्मा भी उसके सिर पर होने के कारण समर्पण भाव के तहत उसेही स्वाहा होना पड़ता है। मैत्रेयी पुष्पाने लिखा है," औरत सदैव रही है-सहने के लिए, झेलने के लिए और जूझने के लिए ..... ।"[४] विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में महिलाओं की स्थिती आज भी शोचनीय और पीड़ादायी है।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिती में परिवर्तन हुआ है इसमें कोई दो राय नहीं है। स्त्री और पुरुष रथ के दो पहिये हैं और इनके बिना समाज संपूर्ण नहीं हो सकता यह जानते हुए भी आज स्त्री का आस्तित्व एवं अस्मिता का संघर्ष शुरु है। आज भी उसे खुद को प्रमाणित करना पडता है। कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है, सन्देश की निगाह का सामना करना पड़ता है। उसके प्रश्न आज भी खत्म नहीं हुए हे। आज भी पूरे विश्व में नारी शोषण रहा है। महिला मुक्ति संगठन, महिलासम्मेलन, महिला दशक, अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष, महिला कानून, महिलाओं के लिए योजनाएँ बनीं लेकिन महिला अत्याचारों की संख्या कम होने की बजाय बढ़ती ही गई। जिसके परिणामस्वरुप महिला लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ। जिन्होंने स्पष्ट किया है कि दुनिया की प्रगती की बातें तब तक निरर्थक है जब तक सामाजिक नवनिर्माण में महिलाओं की सक्रिय सहायता नहीं ली जाती।[५] पिछले कई वर्षे में नारी के गुणात्मक सोच में परिवर्तन हुए हैं परन्तु आज भी वह विवश है परम्परा रीती- रिवाज के बन्धनों में उसे दन्ड झेलना पडता हे एवं अपमानित होना पडता है परन्तु ऊँचे पद पर पहुँचने के बाद भी पारिवारिक जीवन की सफलता पर उसे परखा जाता है। आज की स्त्री प्रगति के पंख लगाकर आकाश में मुक्त विहार तो कर रही है परन्तु जब भी अधिकारों की बात आती है समाज विरोध करता है। "महिलाओं के लिए ३३ % आरक्षण संसद के पटल पर विचाराधीन है। समग्र विश्व के आधी आबादी नारी ३३% आरक्षण के लिए मुहताज है।"[८]

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि आज प्रत्येक वर्ग को नारी सशक्तीकरण के फलस्वरुप उदयोग, मीडिया, कानून, न्याय, जैसे क्षेत्रों में योगदान दे रही है। कानून का प्रावधान और सरकारी योजनाओं के बल पर वह आगे बढ़ रही है लेकिन उसकी समस्याएँ भी बढ़ रही है। वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारी करण के युग में नारी उपभोग की सामग्री बन गयी है। विश्व महिला जागृती मंडल बनाने के बावजूद भी नारी प्रश्नों का हल नहीं हुआ है। आज स्त्री पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है और अपना दायित्व भी बखुबी निभा रही है लेकिन इसके साथ ही उसके खिलाफ सामाजिक उत्पीडन की वारदातें भी बढ़ रही है। माओ का यह कथन बिल्कुल सही लगता है,"औरतें आधा आकाश थामे हुए हैं मुझे लगता है धरती का हर घर आज स्त्री ही बचाये हुए है, अपने समर्पण और संघर्ष से।"[९]

संदर्भ - सुची

१.	मनीष कुमार	महिला सशक्तीकरण दशा और दिशा	पृ. १३०
२.	डॉ. मुदिता चन्द्रा	नारी का बलता स्वरुप	पृ. ३८१
३.	मनीष कुमार	महिला सशक्तीकरण दशा और दिशा	पृ.५४
४.	डॉ. मुदिता चन्द्रा	नारी का बदला स्वरुप	पृ. ४७९
५.	डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल	वैश्वीकरण एवं हिंदीगद्य साहित्य	पृ.५२
६.	डॉ. मुदिता चन्द्रा	नारी का बदलता स्वरुप	पृ.६८
७.	डॉ. शैल्जा पाटील	वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी	पृ.८७
८.	डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल	वैश्वीकरण के संदर्भ में हिन्दी	पृ.५४
९.	डॉ. मुदिता चन्द्रा	नारी का बदलता स्वरुप	पृ.३०